المملكة العربية السعودية
المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالأحساء
تحت إشراف وزارة الشئون الإسلامية والأوقاف والدعوة والإرشاد
السلسلة التعليمية
الكتاب الأول

أسلمت حديثاً فماذا أتعلم ؟

मैंने अभी इस्लाम स्वीकार किया है .... तो मैं क्या शिक्षा प्राप्त करूँ

मनतव्य

डाक्टर अली पुत्र सअद अज़्ज़ुवैही
सदस्य उच्चतम उलमा समिति सऊदी अरब

पुनरीक्षण

डाक्टर-अब्दुल्लाह पुत्र अब्दुर्रहमान अस्सुलतान
सहायक अध्यापक धार्मिक विधान

डाक्टर-अब्दुल्लाह पुत्र मुहम्मद अलजुग़ैमान
सहायक अध्यापक पाठयकमों एवं विवेकीयों के अध्यापन विधि इमाम मुहम्मद पुत्र सऊद विश्वविधालय

डाक्टर-अब्दुस्सलाम पुत्र इब्राहीम अलहुसय्यिन
सहायक अध्यापक धार्मिक विधान
इमाम मुहम्मद पुत्र सऊद विश्वविधालय

शैख -अब्दुल अज़ीज़ पुत्र अहमद अलउमैर
न्यायाधिकारी फौजदारी कोर्ट क़तीफ

هندي

प्रकाशकः- इस्लामिक सेंटर अहसा अनुसंधान तथा अनुवाद विभाग

मनतव्य

डाक्टर अली पुत्र सअद अज़्ज़ुवैही
सदस्य उच्चतम उलमा समिति सऊदी अरब

بسم الله الرحمن الرحيم

सब प्रशन्सा मात्र अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिये है,और अल्लाह की दया तथा कल्याण हो उसके विश्वसनीय संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, उनके संतान,उनके साथियों तथा अच्छे प्रकार से महाप्रलय के दिन तक आप के आदेश पालन करने वालों पर।

निःसन्देह अहसा इस्लामिक सेंटर हृदयग्राही देश सऊदी अरब में काम व काज के लिए आने वाले बिमुस्लिमों को इस्लाम स्वीकार करने का निमंत्रण का महान कर्तव्य निभा रहा है। तथा अल्लाह तआला की दैवयोग से इस विशेष कार्य में सफलता प्राप्त हो रही है। अतः अबतक विभिन्न देशों के नये मुस्लिमों की संख्या हज़ारों तक पहुँच गई है।

इसी प्रकार सेंटर सऊदी अरब में अन्य देशों से आने वाले मुसलमानों में धार्मिक जागरण में बढ़ोतरी के लिए विभिन्न प्रकार से प्रयास कर रहा है। उदाहरणतः शास्त्रीय पाठ्यक्रम का प्रबन्ध तथा इन कोरसों में भाग लेने वाले क्षात्रों के विचार तथा विवेक अनुसार पाठयक्रमों के तय्यार करने का भी महान सेवा कररहा है।

सेंटर अपनी पाठयक्रमों की पहली कड़ी जिसका नाम है कि -मैंने अभी इस्लाम स्वीकार **किया है** ..... तो मैं क्या शिक्षा प्राप्त करूँ ? प्रकाशित कररहा है।

यह पुस्तक अपने विषय में लाभकारी,ज्ञानात्मक जानकारी में ठीक ठाक,शैली में सरल,अपने सिद्धांतों में स्पष्ट तथा नये मुस्लिमों के लिये अति अनुकूल है।

मैं अल्लाह तआला से उसके पवित्र नामों तथा सर्वोच्च गुणों के वसीले से प्रार्थना करता हूँ कि वह इस शुभ प्रयासों को सेंटर के उत्तरदायों के नेकियों के पलड़े में रखे तथा उनको अच्छे कामों तथा बातों पर ठीक ठीक चलाये। मात्र वही अल्लाह इसकी शक्ति रखने वाला है। और अल्लाह की दया तथा कल्याण हो उसके विश्वसनीय संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, उनके संतान,उनके साथियों तथा अच्छे प्रकार से महाप्रलय के दिन तक आप के आदेश पालन करने वालों पर।

डाक्टरः अली पुत्र सअद अज़्ज़ुवैही

आरंभिका

सब प्रशन्सा मात्र अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिये है,और अल्लाह की दया तथा कल्याण हो हमारे संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, उनके संतान,उनके साथियों तथा महाप्रलय के दिन तक आप के आदेश पालन करने वालों पर।

साधारणतः मुसलमानों को जागरुक करना तथा विमुस्लिम मित्रों को इस्लाम के ओर बुलाना और उनमें से नये मुस्लिमों को लाभ पहुँचाने वाली शिक्षा देना इस्लामिक सेन्टर अहसा के महत्वपूर्ण उद्देश्य में से है। इसी महान उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये सेन्टर ने ऐसा वार्षिक कार्यक्रम बनाया है जिसमें शास्त्रीय ज्ञान की शिक्षा देने के लिये पाठ्यक्रम रखा है। अतः प्रशिक्षण उद्देश्य को पाने के लिये इन पाठ्यक्रमों मे पढ़ने वालों तथा शैक्षणिक समय का पक्षपात रखना और उचित साधनों का प्रयोग करना आवश्यक था। इसी कारण ऐसे पाठ्यक्रम बनाने की आवश्यकता पड़ी जिसमें उचित शिक्षण साधनों को प्रयोग करके प्रशिक्षण उद्देश्य को पाने के लिये स्पष्ट रीति के साथ सही महत्वपूर्ण जानकारी हो। अतः यह पाठ्यक्रमों की एक कड़ी है ।

सेन्टर इस आशा अनुसार कि इन पाँठ्यक्रमों से सऊदी अरब में इस्लामिक सेन्टरों की भारी संख्या तथा पूरे संसार में इस्लामिक केन्द्रीयलाभ उठायें ऐसे विवरणतः रूप से ज्ञानात्मक विषय का आयोजन किया गया है जिसका प्रयोग उस रीति अनुसार सरल है जिसकी नियुक्ति अलग अलग पाठयकम में क्या गया है साथ ही साथ उचित समय तथा स्थान के अनुकूल इसका प्रयोग भी संभव है।

मुझे अल्लाह से आशा है कि शैक्षणिक मैदान में यह पाठ्यक्रम खाली स्थान की पुर्ति करेगा तथा प्रशिक्षण कर्मणयता सरल करेगा।

यह पुस्तक जो कि आप के हाथ में है -मैंने अभी इस्लाम स्वीकार किया है ००००००० तो मैं क्या शिक्षा प्राप्त करूँ ?(मैं नया नया मुसलमान हुआ हूँ००००००० तो मैं क्या सीखूँ ?)उन शैक्षणिक कड़ियो की पहली कड़ी है जिन्हें अहसा इस्लामिक सेंटर तैयार करके प्रसारित करना चाहता है।

अल्लाह से हम प्रार्थना करते हैं कि वह इस पुस्तक द्वारा लोगों को लाभ पहुँचाये और जिस किसी ने इसके प्रसारित करने में भाग लिया है उसे अच्छा फल दे वही इसका मालिक है तथा वही इस पर शक्तिमान है , हर प्रकार की प्रशंसा मात्र अल्लाह केलिये है तथा दरूद एंव सलाम हो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर , उनके सारे संतान तथा साथियों पर।

संचालक अहसा इसलामिक सेन्टर
अबदुर्रहमान पुत्र सुलैमान अल्जुग़ैमान

भूमिका

सम्पूर्ण प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने अपने कृपा से हमें इस धर्म का मार्ग दिखाया। अगर अल्लाह हमें पथ प्रर्दशन न दे तो हमें पथ प्रर्दशन नहीं मिल सकती। तथा उसने हमें अंधकार से ज्योति,दुखः से शान्ति,दुर्भाग्य से सौभाग्य की ओर निकाला और दरूद व सलाम हो उस नबी पर जिस को अल्लाह ने रहनुमा,शुभसमाचार सुनाने वाला,अज़ाब से ड़राने वाला, अल्लाह की ओर अल्लाह की आज्ञा से बुलाने वाला तथा रोशन दीप बना कर भेजा तथा उनपर ऐसी पुस्तक उतारी जो सीधी मार्ग की पथ प्रदर्शन करती है। और उनको सारे संसार वालों के लिये कृपालु बनाया।

यह पुस्तक क्यों लिखी गई ?

हर प्रकार की प्रशंसा अल्लाह के लिये है कि प्रतिदिन विभिन्न देशों के लोग भारी संख्या में इस्लाम धर्म स्वीकार कर रहे हैं। जिससे अल्लाह की ओर बुलाने वाले आवाहकों की उत्तरदायित्व बढ़ जाती है कि वे उन्हें उनके धर्म की बातें तथा उनपर क्या क्या अनिवार्य है और उनपर नये मुस्लिम समाज में क्या अधिकार है सिखायें।

क्योंकि नये मुस्लिम के लिये धर्म के बहुत से शास्त्रानुसार प्रतिबन्ध तथा कार्य इस्लाम लाने के तुरंत बाद करना आवश्यक हो जाता है। उदाहरणतः स्वरूप नमाज़(सलात) तथा उसके संबन्धित वह बातें जिसके बिना सलात सही तथा उचित रूप से न होगी।

और इस मैदान का अवलोकन करने वाला यह अनुभूति करता है कि नये मुस्लिम के लिये लिखी गई बहुत सी शैक्षणिक पुस्तकें शैक्षिक प्रशिक्षण तथा व्यवहारिक निपुणतः से खाली हैं जिसका यह विचार था कि नये मुस्लिमों के लिये इस्लाम स्वीकार करने के पहले ही दिन से कोई ऐसा शक्तिशाली निमंत्रण कार्यक्रम हो जो उनके लिये कम से कम समय तथा सरल रूप से इस धर्म की वह बातें प्रस्तुत कर सके जिसके विषय में अज्ञानता उचित नहीं।

१५वर्ष से अधिक समय से इस्लामिक सेंटर अहसा ने नये मुस्लिमों को शिक्षा देने की उत्तरदायित्व अपने कंधे पर ले चुका है। अतः उन्हें शिक्षा देने के लिये मौलिक शिक्षाक्रम बनाने का संकलप किया तथा इन १५ वर्षों में आवाहन एवं वैज्ञानिक जानकारी तथा निरंतर व्यवहारिक अनुभव संचार शिक्षाक्रम बनाया गया। ताकि नये मुस्लिम को धर्म की बहुत सी महत्वपूर्ण तथा शास्त्रानुसार बातें जिनका सीखना आवश्यक है कम से कम समय में सरल तथा संगठित और स्पष्ट रूप से सिखाया जासके।

यह शिक्षाक्रम किस के लिये है ?

इस्लाम स्वीकार करने के बाद पहले सप्ताह में नये मुस्लिमों के लिये ।

पुस्तक की परिभाषा

१. (मुहतदी)पथ प्रर्दशन उत्कोचः जो नया नया मुसलमान हुआ हो।
२. अध्यापक. वह आवाहक जो वैज्ञानिक योग्यता रखता हो तथा प्रस्तुत पाठ्यकम में प्ररस्तुत मौलिक प्रमाणित पहुँचा सकता हो।
३. प्रथम सप्ताह. यह वह समय है जो नये मुस्लिम के इस्लाम स्वीकार करने के तुरंत बाद आता है अर्थात वह समय जो इस पाठ्यकम के पढ़ाने के लिये निश्चित किया गया है।

शैक्षिकविधि.

१ .यह पाठ्यकम उस नये मुस्लिम के लिये है जो बिल्कुल कुछ भी उन शोधानीय शास्त्रीय आदेशों को न जानता हो जिनका करना इस्लाम स्वीकार करने के तुरंत बाद उस पर आवश्यक है।
२. इस पाठ्यकम के विषय पढ़ाने के लिये समय केवल एक सप्ताह है परन्तु आवश्यकतानुसार इसको संक्षिप्त और बढ़ाया भी जा सकता है अर्थात कम या अधिक समय में भी पढ़ाया जा सकता है।
३. इस पाठ्यकम की कम महत्व नुसार की गयी है अतः कमानुसार महत्वपूर्ण बातों को लिखा गया है।
४. हर पृष्ठ के बायें ओर किनारा छोड़ दिया गया है ताकि नया मुस्लिम पहले पहल अपनी द्वष्टिगतें तथा व्याख्याएं लिख सके।
५. उस अध्यापक को चाहिये जो इस पुस्तक को पढ़ा रहा है कि वह पाठ्यकम को दिये गये सूचीनुसार सरल तथा कम रूप और उत्तरोत्तर पढ़ाये।
६. इस पुस्तक को व्यक्तिगत तथा संस्थागत दोनो प्रकार पढ़ाया जा सकता है। परन्तु उत्तम यह है कि ऐसे शैक्षिक वातावरण में पढ़ाया जाये जहाँ नवीनतम शैक्षिक साधनों का प्रबन्ध किया गया हो।
७. पढ़ाई आरंभ करते समय यह पुस्तक नये मुस्लिम को भी दिया जाये।
८. अध्यापक को चाहिये कि वह पुस्तक के बिषय का प्रतिबन्धक हो तथा जो कुछ इसमें है उसका आबन्द्ध हो ताकि नये मुस्लिम का मन असतव्यस्त न हो।
९. अध्यापक को चाहिये कि वह पहले ही दिन इस पुस्तक के पढ़ाने का अध्यापन विधि,इसके उद्देश्य तथा पढ़ाते समय या उसके पश्चात किस प्रकार नये मुस्लिम को भाग लेना चाहिये बता दे।

इस पुस्तक की जानकारी की स्थिति :

इस पुस्तक में लिखी गई जानकारी के कुर्आन तथा सही हदीस से अनुकूलता का आत्मसंतोष एवं विश्वास तथा प्रत्यालोचन और पुष्टिकरण ज्ञानियों तथा विश्वसनीय एवं अंगीकायोग्य द्वारा किया गया है।और यह नये मुस्लिम के इस्लाम स्वीकार करने के तुरंत बाद प्रारम्भिक शिक्षा के लिये बहुत ही उचित है तथा इस में वह मौलिक जानकारी है जिस से कोई मुसलमान निःस्पृह नहीं हो सकता।

पाठ सूची

[1] इस्लामिक सेंटर अहसा में नये मुस्लिमों को ऐसी चीज़ो की शिक्षा देना जिसका ज्ञान प्राप्त करना प्रत्येक मुसलमान के लिये अनिवार्य है के नियमाअनुसार तथा कमानुसार पुस्तक के प्रत्येक विषय को १२ घंटो तथा ८ दिनों पर बिभाजित कर दिया गया है। प्रत्येक आदमी या जो भी इस पुस्तक से लाभ उठाना चाहे वह विषय को अपने समयानुसार बाट सकता है बस निवेदन है कि निरंत तथा लिखे गये विषय और जानकारी का ध्यान रहे।

इस पुस्तक का सामान्य उद्देश्य

इस पुस्तक के नोदन की पूर्ति करते समय नये मुस्लिम को चाहिये कि वह निम्नलिखित लक्ष्य प्राप्त कर ले ।

पहला : जानकारी लक्ष्य

१ - इस्लाम के आधार बताये ।
२- ईमान के आधार बताये ।
३- वुज़ू करने का नियम बताये ।
४- शास्त्रानुसार स्नान का नियम बताये ।
५- मोज़े तथा पाताबे पर मसह करने के आदेशों की स्पष्टीकरण करे ।
६- फ़र्ज़ सलातों की गिनती करे ।
७- फ़र्ज़ सलातों के महत्व एवं प्रमुखता बताये
८- फ़र्ज़ सलातों के समय नियुक्त करे ।
९- हर सलात की रकअतों की गिनती नियुक्त करे ।
१०- कुछ छोटी सूरतें कंठस्थ करके पढ़े ।
११-सलात की दुआयें कंठस्थ करके पढ़े ।

दूसरा कौशलता लक्ष्य

१ - अच्छे प्रकार पूर्ण रूप सलात पढ़ कर दिखाये ।
२- अच्छे प्रकार पूर्ण रूप वुज़ू करके दिखाये ।
३- सही प्रकार मोज़े तथा पैताबे पर मसह करे ।

अध्यापन विधि के लिये परामर्श

- वैमनस्य तथा बात चीत ।
- क्रियात्मक एवं व्याहारिक ।
- सहयोगी शिक्षाप्राप्त ।
- क्षात्रों को विभिन्न छोटे छोटे दलों में बाँटना ।
- क्षात्रों को योग्यतानुसार नियुक्ति करना ।
- उन से प्रश्न पूछना ।
- उपदेश देना।

पहला पाठ

इस्लाम तथा ईमान के आधार

पाठ के लक्ष्य

नये मुस्लिम से आशा एवं निवेदन है कि वह इस पाठ के नोदनों की पूर्ति करते समय :

१- इस्लाम के पूरे आधार याद कर ले।
२- ईमान के पूरे आधार याद कर ले।
३- कियात्मक सही रूप वुज़ू करे।
४- कियात्मक तसबीह,तहमीद, तकबीर, तहलील के साथ सलात पढ़े।

पाठ के लिये दिये गये परामर्श समय का बटवारा

विषय	समय
इस्लाम तथा ईमान के आधार	२५मिनट
कियात्मक वुज़ू	२५मिनट
कियात्मक सलात	२५मिनट
लक्ष्य तक पहुँचने का पता लगाना	१५मिनट

पाठन विधि के लिये साधन मंत्रण परामर्श

१- इस्लाम के आधार का परिचय पट्ट।
२- ईमान के आधार का परिचय पट्ट।
३- इस्लाम तथा ईमान के हर आधार के अलग अलग स्टीकर्स
४- सलात तथा वुज़ू के कामों की विभिन्न चित्र लाया जाये और नये मुस्लिम को सही रूप कमानुसार लगाने का आदेश दिया जाए।

पहला

इस्लाम के आधार

इस्लाम के आधार पाँच स्तंभों पर है,कोई भी मनुष्य उस समय तक मुसलमान नहीं हो सकता जब तक उनकी स्वीकृति न करे तथा निस्स्वार्थता एवं सच्चे आस्था के साथ उन की पूर्ति न करे। इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अनहुमा से हदीस आई है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि इस्लाम के आधार पाँच चीज़ों पर है ! इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं तथा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल(दूत)हैं,सलात् की स्थापना करना, ज़कात देना, रमज़ान के (सौम)रोज़े रखना, उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह के घर तक पहुँचने का सामर्थ्य रखता है हज्ज करना ।(सही बुख़ारी एवं मुस्लिम)

इस्लाम के आधार यह है

(1) दोनो शहादत . (अशहदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह) (इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं तथा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल(दूत)हैं ।)

(2) सलात की स्थापना करना ।

(3) ज़कात देना ।

(4) रमज़ान के सौम रखना।

(5) उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह के घर तक पहुँचने का सामर्थ्य रखता है हज्ज करना ।

(अशहदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाह) का अर्थ यह है कि :
अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं मात्र वही हर प्रकार की उपासना भय, आशा,भरोसा,न्याय तथा सहायता याचना,प्रार्थना,रुकूअ,सजदे, आदि का अधिकारी है । अतः अल्लाह ही सत्य उपास्य है और अल्लाह के अतिरिक्त जिन वस्तुओं की पूजा होती है सब के सब असत्य उपास्य है । इस शहादत में नकारात्मक तथा स्वीकारात्मक दोनों वस्तु है । अल्लाह के अतिरिक्त सारे लोगों के लिये हर प्रकार की उपासना को नकारना तथा हर प्रकार की उपासना मात्र अल्लाह के लिये स्वीकार करना जिसका कोई भागीदार नहीं है ।
तथा(अशहदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह)मुहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम अल्लाह के सत्य संदेष्टा एवं दूत हैं उनकी हर दिये गये आदेशों में आज्ञापालन करना,उनके ओर से हर दी हुई सूचना में उनकी पुष्टि करना,उनकी रोकी हुई चीज़ों से रुकना,उनकी पथप्रदर्शन अनुसार अल्लाह की उपासना करना आवश्यक है ।

मंथन

- आदमी मुसलमान कब होगा ?
- क्या उस आदमी का इस्लाम सही होगा जो रमज़ान के रोज़ा(सौम) तथा हज्ज की स्वीकृति करे परन्तु ज़कात देना स्वीकृति न करे ?

दूसरा

ईमान के आधार

ईमान के अधार ६ हैं. किसी मनुष्य का ईमान उस समय तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक सब पर विश्वास न रखे उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से हदीस आई है कि एक आदमी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ईमान के समूह प्रश्न किया तो आप ने कहाः कि तुम अल्लाह पर, उसके पार्षदों, पुस्तकों , दूतों, महाप्रलोक के दिन तथा अच्छी एवं बुरी भाग्य पर विश्वास रखो (*सही मुस्लिम*)

ईमान के आधार यह है

(१) अल्लाह तआला पर ईमान (विश्वास) रखना।

(२) फ़रिश्तों (पापर्दों)पर ईमान (विश्वास) रखना ।

(३) अल्लाह की ओर से अवतारित की गई पुस्तकों पर ईमान (विश्वास) रखना ।

(४) रसूलों (दूतों) पर ईमान (विश्वास) रखना।

(५) महा प्रलोक के दिन पर ईमान (विश्वास) रखना।

(६) प्रत्येक अच्छी और बुरी भाग्य पर ईमान (विश्वास) रखना ।

मंथन

- मृत्य के बाद पुनः जीवित होने को नकारना कैसा है ?
- क्या उस आदमी का ईमान सही होगा जो अल्लाह तथा उसके पार्षदों पर विश्वास रखे और आल्लाह के दूतों पर विश्वास न रखे ?

मैं क्रियात्मक वुजू करता हूँ

मैं सलात पढ़ने का नियम सीख रहा हूँ और जब तक सलात की सारी दुआयें न याद कर सकूँ केवल यह याद करूँगा तथा पूरी सलात में इसी को पढ़ूँगा (सुब्हानल्लाह बल् हम्दुलिल्लाह बला इलाह इल्लल्लाह बल्लाहुअक्बर) ।
अर्थ : (मैं अल्लाह की प्रशंसा बयान करता हूँ,सब प्रशंसा मात्र अल्लाह ही के लिये है,तथा अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई अन्य वास्तविक पूज्य नहीं ,और अल्लाह सब से बड़ा है)

मैं अपने ज्ञान की परीक्षा लेता हूँ

सही जानकारी से पहले (✓)तथा गलत से पहले(✗)का चिन्ह लगाता हूँ।

- ☐ जिसने सलात छोड़ दी उसने इस्लाम के आधार में से एक आधार को छोड़ दिया।
- ☐ जिसने भाग्य पर विश्वास को नकार दिया तो उससे ईमान का एक आधार खो गया।
- ☐ मुसलमान पाँच समय की सलात का स्थापना करता है।
- ☐ अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह व अशहदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह जबान से पढ़ना इस्लाम में प्रवेश करते समय का पहला कार्य है।
- ☐ अल्लाह के घर का हज्ज करना इस्लाम के आधार में से एक आधार है।

निम्न लिखित खाली स्थान भरो ?

ईमान के आधार यह हैं।

------------------------------------ पर ईमान (विश्वास) रखना।

------------------------------------ पर ईमान (विश्वास) रखना।

------------------------------------ पर ईमान (विश्वास) रखना।

------------------------------------ पर ईमान (विश्वास) रखना।

------------------------------------ पर ईमान (विश्वास) रखना।

------------------------------------ पर ईमान (विश्वास) रखना।

दूसरा पाठ

वुज़ू तथा स्नान

पाठ के लक्ष्य

नये मुस्लिम से आशा एवं निवेदन है कि वह इस पाठ के नोदनों की पूर्ति करते समय :

१- पूर्ण वुज़ू के क्रमानुसार नियम बातये।
२- क्रियात्मक वुज़ू करे।
३- वुज़ू को समाप्त करने वाली कम से कम चार चीज़ै बताए।
४- मोज़े तथा पातावे पर मसह करने के आदेश बताये।
५- स्नान करने का नियम बताये।
६- स्नान को अनिवार्य करने वाले कारण बताये।

पाठ के लिये दिये गये परामर्श समय का बटवारा

विषय	समय
वुज़ू	२५मिनट
मोज़े तथा पातावे पर मसह	१०मिनट
स्नान करने का नियम तथा स्नान को अनिवार्य करने वाले कारण	२५मिनट
क्रियात्मक स्नान तथा वुज़ू का प्रत्यागमन(दोहराना)	१५मिनट
लक्ष्य तक पहुचने का पता लगाना	१५मिनट

पाठन विधि के लिये साधन मंत्रण परामर्श

१- वुज़ू करने का नियम दृष्टिगोचर वीडियो द्वारा प्रसारित करना।
२- वुज़ू करने के नियम का छपा चित्र।
३- वुज़ू समाप्त करने वाली तथा स्नान आवश्यक करने वाले कामों के पट्ट।
४- बिना वुज़ू तथा अपवित्र(जुनुबी) मनुष्य पर किन कामों का करना बर्जित है की तुलना सूची।

पहला

वुजू

क . वुजू की प्रमुखता

वुजू की प्रमुखता में बहुत सी हदीसें आई हैं। उसी में से है कि अल्लाह के दूत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा है कि जिस आदमी ने अच्छे प्रकार वुजू किया तो उसके पाप उसके शरीर से निकल जाते हैं यथा उसके नाखून के नीचे से भी निकल जाते हैं (सही मुस्लिम)

ख . वुजू करने का नियम

(१) मैं अपने हृदय से वुजू करने की नीय्यत करता हूँ।

(२) मैं बिस्मिल्लाह कहता हूँ।

(३) मैं दोनों हथेलियों को तीन बार धोता हूँ। (चित्र संख्या १ देखो)

१ दोनों हथेलियों के धोने का चित्र

(४) मैं तीन बार कुल्ली करता हूँ (चित्र संख्या २ देखो)

२ कुल्ली करने का चित्र

(५) मैं तीन बार नाक में पानी डाल कर नाक साफ़ करता हूँ।
(चित्र संख्या ३ देखो)

३ नाक में पानी डाल कर नाक साफ करने का चित्र

(६) सिर के बाल उगने के स्थान से ठुडडी के निचले भाग तथा कान से कान तक तीन बार मैं चेहरा धोता हूँ (चित्र संख्या ४ देखो)
अगर दाढ़ी हलकी है तो दाढ़ी तथा उसके नीचे का मैं चमड़ा धोता हूँ और अगर घनी है तो बालों को ऊपर से धो लेता हूँ तथा उँगलियाँ डालकर भीतर से खिलाल कर लेता हूँ

४ चेहरा धोने का चित्र

(७) मैं दोनों हाथों को कुहनियों के साथ तीन बार धोता हूँ (कुहनी कलाई और बाजू के बीच जोड़ का नमा है) (क) एवं (ख) चित्र संख्या ५ देखो)

५ (क) दाहिना हाथ धोने का चित्र

५ (ख) बायाँ हाथ धोने का चित्र

(८) मैं पूरे सिर का एक बार मसह करता हूँ (सिर के अगले भाग से आरंभ करके पीछे गुद्दी तक ले जाता हूँ फिर वहाँ से उसी स्थान पर वापस लाता हूँ जहाँ से आरंभ किया था। (चित्र संख्या ६-(क) एवं (ख) देखो)
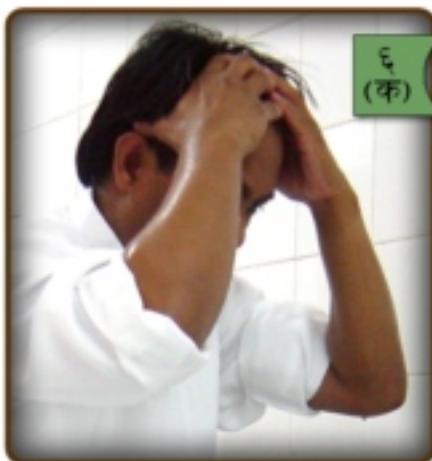
६ (क) सिर के अगले भाग के मसह का चित्र
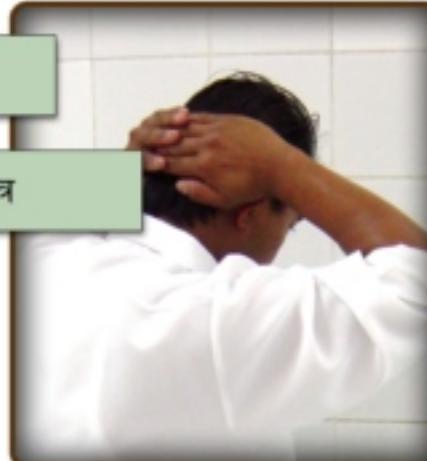
६ (ख) सिर के पिछले भाग के मसह चित्र

(९) मैं दोनों कान का मसह करता हूँ (शहादत की दोनों उँगलियों को मैं अपने दोनों कानों के भीतर डाल कर कान के ऊपरी भाग का अंगूठे से मसह करता हूँ) (चित्र संख्या ७ देखो)

७ दोनो कानों के मसह करने का चित्र

(१०) मैं दोनों पावँ टखनों के साथ तीन बार धोता हूँ।
(चित्र संख्या ८-(क) एवं (ख) देखो)

८ (क) दाहिना पावँ धोने का चित्र

८ (ख) बायाँ पावँ धोने का चित्र

ग .वुज़ू को भंग एवं समाप्त कर देने वाली वस्तुयें

और यह ५ हैं।

(१) पेशाब, पाखाना के मार्ग से किसी भी वस्तु का बाहर निकलना, उदाहर्ण स्वरूप पेशाब ,पाखाना, हवा, मज़ी, वदी।

(२) पाखाना पेशाब के अतिरिक्त स्थान से निकलने वाली अपवित्र वस्तुयें जैसे अधिक खून, पेशाब,पाखाना,अधिक नाक से खून आना।

(३) बुद्धि समाप्त हो जाने से चाहे मस्त नींद जिस में चेत समाप्त हो जाये। चाहे पागलपन या मस्ती या नशा या बेहोशी या किसी दवा के कारण से हो।

(४) बिना किसी पर्दा पाखाना एवं पेशाब निकलने के स्थान को छू लेना।

(५) ऊँट का मास खाना।

(मज़ी ,वह सुफेद लिजबिजा पानी है जो पत्नी से संभोग करने की सोच या उस से खेल कूद करने के समय निकलता है। वदी, वह सुफेद थोड़ा गाढ़ा पानी है जो पेशाब के बाद निकलता है)

घ.अपवित्र मनुष्य पर जो कार्य वर्जित हैं।

(१) सलात

(२) कअबा का तवाफ़ एवं परिक्रमा

(३) बिना पर्दा क़ुर्आन छूना

मंथन

- एक आदमी ने वुज़ू किया फिर बैठे बैठे थोड़ा सो गया क्या उसका वुज़ू समाप्त हो जायेगा ?
- एक आदमी ने वुज़ू किया फिर अपने कपड़े के ऊपर से गुप्त स्थान छू लिया क्या वह फिर से वुज़ू करेगा ?
- एक आदमी ने वुज़ू करने के बाद बकरी का मास खा लिया तो क्या सलात के लिये उसे वुज़ू करना होगा ?
- एक आदमी ने वुज़ू में अपने पावँ धोया फिर अपना चेहरा धोया और अपने सिर का मसह किया फिर अपने हाथ धोया, वुज़ू में जो उसने ग़लत किया बताओ ?

दूसरा

मोजे तथा पातावे पर मसह

अगर चमड़े का मोज़ा हो तो उसे अरबी भाषा में खुफ़ कहते हैं और अगर चमड़े के अतिरिक्त ऊन, रूई सूत का हो तो उसे अरबी भाषा में जौरब कहते है तथा अगर जूता धोने के स्थान को ढ़ाँके हो तो वह भी खुफ के स्थानापन्न होगा।

क. मोजे तथा पातावे पर मसह का हुकुम

अगर कोई मोज़े एवं पातावे पहने हुये है तथा वह वुज़ू करना चाहता है तो उसके लिये मोज़े एवं पातावे के ऊपरी भाग पर निम्न प्रतिबन्धनुसार मसह उचित है।

(१) पानी से वुज़ू करने के बाद उन्हें पहना हो।

(२) टखने के साथ सारे पैर उससे ढके हों।

ख. मसह करने का नियम

मैं हाथ को जल से भिगोने के बाद दोनों मोज़े एवं पैतावे के अधिक तर ऊपरी भाग को हाथ की उंगलियों से महस करता हूँ (चित्र संख्या९ देखो)

९ मोज़े एवं पैतावे पर मसह करने का चित्र

ग . समय

निवासी के लिये अपने मोज़े पर एक दिन तथा एक रात(२४ घंटा)यात्री के लिये तीन दिन तथा तीन रात(७२घंटा)मसह करना जायज़ है। मसह का समय पहली बार वुज़ू समाप्त होने के बाद पहली बार मसह करने के समय से आरंभ होगा।

घ . मसह समाप्त करने वाली चीज़ै

१- समय समाप्त हो जाये।

२- स्नान अनिवार्य हो जाये। (जिसका बयान बाद में आएगा)

३- वुज़ू समाप्त होने के बाद मोजा निकाल लेना।

मंथन

- एक आदमी ने वुज़ू करके दोनों मोजा पहना फिर दोनों निकाल दिया फिर दोनों पहन लिया क्या उसके लिये उन पर मसह करना उचित है ?
- एक आदमी ने पूर्ण मोज़े के ऊपर तथा नीचे दोनों ओर मसह किया तो आप उस से क्या कहेंगें ?

तीसरा

स्नान

क.पूर्ण स्नान का नियम

१- मैं अपने हृदय से पवित्रता प्राप्त करने की निय्यत करता हूँ।

२- मैं बिस्मिल्लाह कहता हूँ।

३- मैं अपने दोनों हाथ तीन बार धोता हूँ।

४- मैं अपने गुप्तांग-शर्मगाह- धोता हूँ।

५- मैं सलात के वुजू के प्रकार पूर्ण वुजू करता हूँ अतः मैं अपने सिर पर इस प्रकार जल डालता हूँ कि मेरे बालों की जड़े भीग जायें, इसी प्रकार मैं पूर्ण स्नान करने के बाद भी अपने दोनों पावँ धुल सकता हूँ।

६- दाहिने ओर से आरंभ करते हुए मैं अपने पूरे शरीर पर जल डालता हूँ फिर बायें ओर। अतः दोनों बगल ,कान के भीतरी भाग में,नाभि तक जल पहुँचाने का प्रयास करता हूँ इसी प्रकार जहाँ तक हो सकता है पूरे शरीर को पानी से मलता हूँ ताकि शरीर का कोई भी भाग सूखा न रह जाये।

ख. इस प्रकार भी स्नान प्राप्त होगा

पवित्रता प्राप्त करने की निय्यत करके बिस्मिल्लाह कहता हूँ फिर पूरे शरीर पर जल डालता हूँ तथा मुँह, नाक में जल डाल कर कुल्ली कर लेता हूँ और नाक सें जल झाड़ लेता हूँ।

ग . स्नान अनिवार्य करने वाली वस्तुयें

१-	जोश तथा आस्वादन के साथ वीर्य (मनी) का निकलना चाहे संभोग से हो या स्वप्नदोष (एहतेलाम)के कारण या किसी और प्रकार से जैसे (हस्तमैथुन) हाथ से मनी निकालना नज़रबाज़ी,स्त्री संभोग आदि।
२-	स्त्री तथा पुरुष की लज्जित स्थान - शर्मगाह - का आपस में मिलना चाहे वीर्य न निकले (लज्जित स्थान में संभोग करना)।
३-	मासिक खून - हैज़ - प्रसव के बाद आने वाले खून निफास का निकलना, स्नान इन दोनों खून बन्द होने के बाद किया जाये गा।
४-	कोई आमुस्लिम जब इस्लाम स्वीकार करे।
५-	मृत्यु (प्रन्तु धर्मय युद्ध में बीरगति प्राप्त करने वाले पर स्नान नहीं है)।

घ.अपवित्र आदमी पर क्या क्या वर्जित हैं ?

१-	सलात पढ़ना।
२-	कअबा का तवाफ करना।
३-	कुर्आन छूना।
४-	कुर्आन पढ़ना ।
५-	मस्जिद में ठहरना, हाँ अगर वुज़ू करले तो ठेहर सकता है।

न. मासिक धर्म (हैज) प्रसव रक्त (निफास) वाली महिला पर क्या क्या वर्जित हैं?

१- सलात पढ़ना। (इस समय में छूटी हुई सलात को बाद में भी नही पढ़ेगी)

२- सौम। (रोज़ा, रमज़ान के छूटे रोज़ो को बाद में रखना अनिवार्य है)

३- कअबा का तवाफ करना।

४- मस्जिद में ठहरना।

५- कुर्आन छूना। (वह कुर्आन पढ़ सकती है तथा पर्दा जैसे दस्ताना पहन कर छू भी सकती है.)

६- संभोग।

मंथन

१. अगर कोई अपनी पत्नी से संभोग करने के बाद कुर्आन पढ़ना चाहे तो उस पर क्या अनिवार्य है ?
१. एक महिला को मासिक धर्म आया फिर ज़ुहर सलात से पहले समाप्त हो गया वह महिला क्या करे गी ?

चौथा

व्याहारिक मोज़े पर मसह

पाँचवा

व्याहारिक वुज़ू तथा सलात का प्रत्यावर्तन

निफास(प्रसव से कुछ पहले तथा बाद में अधिक से अधिक चालीस दिन तक जो खून आता है)
इस्तिहाजह.(माहवारी की खराबी के कारण जो खून आता है) मासिक धर्म के आदेश|

	निफास	इसतिहाजह	मासिकधर्म
परिचय	वह खून जो गर्भवती से उत्पत्ति से कुछ पहले तथा बाद में निकलता है	लाल रंग के खून का निरंतर निकलना जो अपने रंग, दुर्गंध, बारीकी में भिन्न होता है	महिला के गर्भाशय से निकलने वाला गाढ़ा,काला प्राकृतिक खून
निकलने का समय	उत्पत्ति के साथ या एक,दो,तीन दिन पहले .	इसके लिये कोई समय निश्चित नही है बल्कि वह स्त्री सम्बन्धी रोग है.	९ वर्ष से ले कर समाप्त होने तक प्रयः ५०वर्ष तक
युग	अधिक से अधिक ४० दिन तथा कम से कम के लिये कोई अंत नही.	इस के लिये कोई अंत निश्चित नही है	कम से कम एक दिन तथा एक रात,अधिक से अधिक ६ या ७ दिन,अधिकतर ऐसा हर महीने में होता है और अधिक से अधिक १५ दिन ।
इस से क्या अनिवार्य होता है	(१) इस के समाप्त होने के बाद स्नान करना (२) छूटे सौम को दोबारह रखना .	हर सलात के लिये वुज़ू करना.	(१) इस के समाप्त होने के बाद स्नान करना (२) छूटे सौम को दोबारह रखना ।
इस से क्या क्या वर्जित होता है	(१) सलात (२) सौम (३) तवाफ (४)बिना पर्दह कुर्आन छूना (५) मस्जिद में ठहरना (६) संभोग	इस के लिये कुछ अनिवार्य नही है	(१) सलात (२) सौम (३) तवाफ (४) बिना पर्दह कुर्आन छूना (५) मस्जिद में ठहरना (६) संभोग
आदेश	(१) अपने प्रतिदिन के कार्य कर सकती है. (२) बिना संभोग वह अपने पती के संग सो सकती है.	कपड़ों को मैला होने से बचाने के लिये या मस्जिद मे जब वह तवाफ करना चाहे या सलात पढ़ना चाहे खून लगने से रोकने के लिये कुछ बाँध ले	(१) इसके कारण महिला तलाक के समय महिला इद्दत बितायेगी । (२) अपने प्रतिदिन के कार्य कर सकती है। (३) बिना संभोग वह अपने पती के संग सो सकती

मैं अपने ज्ञान की परीक्षा लेता हूँ।

मैं निम्नलिखत प्रश्नों के उत्तर देता हूँ ?

१-कब कब स्नान अनिवार्य होता है ?

....

....

....

....

२-मैं स्नान करने का नियम बताता हूँ ?

....

....

....

....

३-क्या अपवित्र सलात पढ़ सकता है तथा कअबा का तवाफ कर सकता है ?

....

४- मैं वुज़ू को समाप्त करने वाली चीज़ें बताता हूँ ?

....

....

....

मैं सही लेख से पहले (✓) तथा गलत लेख से पहले (×) का चिन्ह लगाता हूँ ?

- ☐ वुज़ू करने वाला अपने सिर का मसह करे फिर अपने दोनों हाथ कुहनियो के साथ धुले।
- ☐ वुज़ू करने के बाद सलात पढ़ने से पहले अगर हवा निकल जाये तो पुनः वुज़ू करना होगा ?
- ☐ अगर बिना वुज़ू मोज़ा पहना है तो उस पर मसह जायज़ नहीं है।

तीसरा पाठ

सलात तथा सूरह फातिहा कंठस्थ करना

पाठ के लक्ष्य

नये मुस्लिम से आशा एवं निवेदन है कि वह इस पाठ के नोदनों की पूर्ति करते समय

१- सलात के महत्व पर चार चीज़ें बताये।
२- सलात की कोई एक प्रमुखता बताये।
३- अनिवार्य सलातों की रकअतें याद कर ले।
४- हर सलात के समय की निश्चित करे।
५- सूरह फ़ातिहा कंठस्थ कर के पढ़े।
६- व्याहारिक वुज़ू तथा सलात का प्रत्यावर्तन करे।

पाठ के लिये दिये गये परामर्श समय का बटवारा

विषय	समय
सलात की महत्व तथा प्रमुखता	१० मिनट
अनिवार्य सलात की रकअतें और समय	२०मिनट
कंठस्त करने के लिये सूरह फ़ातिहा पढ़ना	२५ मिनट
क्रियात्मक वुज़ू तथा सलात का प्रत्यामन	२०मिनट
लक्ष्य तक पहुँचने का पता लगाना	१५मिनट

पाठन विधि के लिये साधन मंत्रण

१- सलात की प्रमुखता के स्टीकर्स।
२- सलात की रकअतों तथा उसके समय की सूची।
३- सूरह फ़ातिहा सिखाने के लिये बीडियो कैसेट।

पहला

सलात की महत्व एवं प्रमुखता

इस्लाम में सलात की विशाल प्रमुखता है जो निम्न प्रकार है :

- इस्लाम के पाचों आधार में से एक आधार है।
- इस्लाम का वह सतंभ है जिस के बिना इस्लाम स्थापित नहीं हो सक्ता।
- अल्लाह ने उपासनों में से सब से पहले सलात ही को अनिवार्य किया है।
- यह प्रतिदिन की अनिवार्य उपासना है जो मुसलमान को अपने पोषक एवं पालनहार से जोड़ती है।
- इस्लाम की बाहरी धार्मिककृत्य में से एक चिन्ह है।
- प्रलोक के दिन सेवक से सब से पहले इसी के विषय में पूछताछ होगी अगर यह सही रही तो सारे कार्य सही होंगे और अगर यह विकृत तथा खराब हो गई तो सारे कार्य विकृत हो जायें गे।

सलात की प्रमुखता के विषय में बहुत सी हदीसें आई हैं। उन्ही में से है कि अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि मैं ने अल्लाह के संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहते हुए सुना कि : आप लोंगों की क्या भ ावना है कि अगर आप में से किसी के घर के सामने एक नहर हो जिस में वह प्रति दिन पाँच समय स्नान करे क्या उस का कुछ मैल कुचैल बाक़ी बचेगा ? लोगों ने कहा कुछ मैल कुचैल बाक़ी नहीं बचेगा। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा यही पाँच समय की सलात की उदाहरण है अल्लाह तआला इनके द्वारा पापों तथा गलतियों को मिटा देता है।(बुख़ारी एवं मुस्लिम)

दूसरा

अनिवार्य तथा फर्ज़ सलातें (उनकी रकअतें तथा समय)

अल्लाह तआला ने दिन तथा रात में अपने भक्तों पर पाँच सलातें अनिवार्य किया है। वह यह हैं फ़ज्र की सलात, ज़ुहर की सलात,अस्र की सलात, मग़िरब की सलात, इशा की सलात। इसी प्रकार अल्लाह ने यह भी अनिवार्य किया है कि आप निश्चित समय में पढ़ें। अल्लाह तआला ने फर्माया :

﴿ إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَوْقُوتًا ﴾ (النساء: من الآية١٠٣)

(अवश्य सलात मुसलमानों पर निश्चित तथा निर्धारित समय पर अनिवार्य की गई है)

अनिवार्य सलातों के नाम तथा रकअतों की स्पष्टी करण निम्न आलेख में की गई है।

अनिवार्य सलातों के समय तथा रकअतों की पृष्ठकरण

सलातें	सलातों की रकअतें	सलातों के समय
फज्र	दो रकअत	प्रत्यूष उदय होने से लेकर सूर्य उदय होने तक
ज़ुहर	चार रकअतें	सूर्य ढलने से लेकर उस समय तक जब तक कि हर चीज़ का छाया असली छाया के अतिरिक्त उस के बराबर होजाये
अस्र	चार रकअतें	ऐच्छिकनुसार ज़ुहर का समय समाप्त होने के बाद से लेकर सूर्य के पीतु होने तक तथा व्याकुल के लिये सूर्य डूबने तक
मग़िरब	तीन रकअतें	सूर्य डूब जाने से ले कर सान्छ्य लालिम समाप्त होने तक
इशा	चार रकअतें	सान्छ्य लालिमा समाप्त होन से लेकर आधी रात तक

मंथन

- एक आदमी ने ज़ुहर की सलात सूर्य ढलने से पहले पढ़ लिया क्या उसकी सलात सही होगी ?
- एक महिला रात के अन्तिम पहर सोई और सूर्य ऊंचे चढ़ने के बाद जागी तो आप उस से क्या कहें गे ?
- क्या आप को इस पुस्तक में लिखी गई सलात की प्रमुखता के अतिरिक्त किसी और प्रमुखता का ज्ञान है ?

तीसरा

सूरह फ़ातिहा (कंठस्थ करना)

सूरह फातिहा

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَـٰنِ ٱلرَّحِيمِ ۝١ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلْعَـٰلَمِينَ ۝٢ ٱلرَّحْمَـٰنِ ٱلرَّحِيمِ ۝٣
مَـٰلِكِ يَوْمِ ٱلدِّينِ ۝٤ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۝٥ ٱهْدِنَا ٱلصِّرَٰطَ
ٱلْمُسْتَقِيمَ ۝٦ صِرَٰطَ ٱلَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ ٱلْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا ٱلضَّآلِّينَ ۝٧

अर्थः सब प्रशंसा अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिए है। बड़ा दयावान अति करूणामयी है। बदले के दिन (क़ियामत) का मालिक है। हम तेरी ही उपासना करते हैं तथा तुझ ही से सहायता माँगते है। हमें सत्य मार्ग दिखा। उन लोगों का मार्ग जिन पर तूने उपकार किया उनका नहीं जिन पर प्रकोप हुआ तथा न गुमराहों का।

चौथा

क्रियात्मक वुज़ू तथा सलात का प्रत्यामन

१- क्रियात्मक वुज़ू का प्रत्यामन।
२- दो या दो से अधिक बार क्रियात्मक सलात का प्रत्यामन।
३- जमाअत के साथ सलात पढ़ने के लिये मस्जिद ले जाना ताकि वे सलात पढ़ने वालों को सलात पढ़ते हुये देखे।

मैं अपनी जानकारी की परीक्षा लेता हूँ

१- मैं सूरह फ़ातिहा पढ़ता हूँ ?

२- मैं कोष्ठ के बीच सही संख्या लिखता हूँ।

इशा सलात की रकअतों की संख्या ☐
फज्र सलात की रकअतों की संख्या ☐
ज़ुहर सलात की रकअतों की संख्या ☐
अस्र सलात की रकअतों की संख्या ☐
मग़्रिब सलात की रकअतों की संख्या ☐

३- मैं निम्न लिखित खाली स्थान भरता हूँ ?

१ . मग्रिब सलात का समय ....
२. ज़ुहर सलात का समय ....
३. दिन तथा रात में मुसलमान पर .... सलात अनिवार्य है।

....
....
....

५- सही वाक्य पर (✓) तथा गलत पर(✖)का चिन्ह लगाता हूँ।

☐ अल्लाह ताआला सलात द्वारा पाप मिटा देता है।
☐ अस्र सलात का समय ज़ुहर सलात के समाप्त होने के बाद से लेकर सूर्य के पीतु होने तक है।
☐ फज्र उदय होने से लेकर ज़ुहर के समय तक फज्र सलात का समय है।
☐ अल्लाह ने अपने सेवकों पर दिन तथा रात में पाँच समय की सलात अनिवार्य किया है

चौथा पाठ

सलात का नियम एंव तशह्हुद कंठस्थ करना

पाठ के लक्ष्य

नये मुस्लिम से आशा एवं निवेदन है कि वह इस पाठ के नोदनों की पूर्ति करते समय :

१- सलात से पहले जिन वस्तुओं की उसे आवश्यक्ता है उसकी गणना करे।

२- सलात पढ़ने का नियम बताये।

३- सलात की दुआ़ओं तथा पूर्ण नियमों के साथ सलात पढ़े।

४- बिना किसी ग़लती के मौखिक तशहहुद पढ़े।

पाठ के लिये दिये गये परामर्श समय का बटवारा

विषय	समय
दुष्टिगोचर सलात पढ़ने का नियम	२५मिनट
कियात्मक सलात	२०मिनट
कंठस्थ करने के लिये तशहहुद पढ़ना	३०मिनट
लक्ष्य तक पहुँचने का पता लगाना	१५मिनट

पाठन विधि के लिये साधन मंत्रण

१- सलात के नियमों की बीड़ियो कैसेट दिखाना।

२- सलात के नियमों का छपे चित्र।

३- तशहहुद सिखाने के लिये आडियो कैसेट।

४- सलात की दुआ़ओं के पृष्ठाचिन्ह।

पहला

सलात के नियम

सलात से पहले

जब मैं सलात पढ़ना चाहूँ तो मेरे ऊपर निम्न कामों का करना आवश्यक है :

- सलात के समय हो जाने की पुष्टि एवं आग्रह करना (पीछे सलात का समय लिखा जाचुका है)।
- छोटी एंव बड़ी अपवित्रता से पवित्रता प्राप्त कर लेना (बड़ी अपवित्रता जिस से स्नान अनिवार्य हो तथा छोटी अपवित्रता जिस से वुजू भंग होजाये)।
- शरीर,वस्त्र,तथा जिस स्थान पर सलात पढ़ रहा हूँ उस के पवित्र होने का आग्रह कर लेना।
- शरीर के छिपाने वाले स्थान को कपड़े से छिपा लेना।
- क़िबलह जो कि काअबह है उस के ओर मुँह करके खड़ा होना।
- निय्यत,जो उपासना करना चाहता हूँ विशेषरूप उस उपासना का ह्रिदय से निय्यत करना।
- शक्ति होते हुए खड़ा होना।

सलात पढ़ना

फिर मै सलात पढ़ना आरंभ करता हूँ और यह इस प्रकार है !

(१) मैं अपने सजदह के स्थान पर निगाह रखते हुये अल्लाहु अक्बर (अल्लाह सब से बड़ा है)कहते हुये (तकबीर तहरीमह)कहता हूँ।

(२) मैं तकबीर तहरीमह (अल्लाहु अक्बर)कहते समय अपने दोनों हाथों को अपने दोनों कंधों तक या अपने दोनों कानों तक उठाता हूँ। (चित्र संख्या १ - तथा २ देखो)

१ दोनों कंधों तक दोनों हाथ उठाने का चित्र)

२ दोनों कान तक दोनों हाथों के उठाने का चित्र

(३) फिर मैं अपने दायें हाथ को बायें हाथ पर रख कर अपने छाती पर रखता हूँ। (चित्र संख्या ३ - तथा ४ देखो)

३ दोनों हाथों को छाती पर रखने का आगे से चित्र

४ दोनों हाथों को छाती पर रखने का किनारे से चित्र

(४) फिर मैं दुआये सना पढ़ता हूँ।
सुब्हानका अल्लाहुम्मा व बिहम्दिक व तबारकस्मुक व तआला जद्दुक व लाइलाहा ग़ैरुक.(ऐ मेरे अल्लाह मैं तेरी प्रशंसा के साथ तेरी पवित्रता बयान करता हूँ,तेरा नाम सम्पन्न्ता तथा बरकत वाला है,तेरा उच्चता उच्चतर है, तेरे अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं।)

(५) फिर अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम,बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम (मैं अल्लाह द्वारा पतित शैतान से शरण माँगता हूँ। अल्लाह दयावान करूणामयी के नाम से प्रारम्भ करता हूँ) कहता हूँ तथा सूरह फ़ातिहा पढ़ता हूँ फिर इस के बाद ज़ोर से सूरत पढ़ी जाने वाली सलात में ज़ोर से तथा धीरे से पढ़ी जाने वाली में धीरे से आमीन (ऐ अल्लाह स्वीकार कर ले) कहता हूँ।

(६) फिर क़ुर्आन मे से जो मुझे याद है पढ़ता हूँ।

(७) मैं अल्लाहु अक्बर कहते हुये रुकू करता हूँ।
क. अपने दोनों हाथों को अपने दोनों कंधों या दोनों कानों तक उठाते हुये (इससे पहले वाले पृष्ठ पर चित्र संख्या १-२ देखो)
ख. मैं अपना सिर बिल्कुल अपनी पीठ के बराबर रखता हूँ तथा अपनी निगाह अपने सजदह के स्थान पर रखता हूँ।
ग. अपने दोनों हाथ अपने दोनों घुटनों पर इस प्रकार रखता हूँ कि मेरी उंगलियाँ अलग अलग खुली होती हैं।
घ. पूर्ण संतोषरूप में रुकू करता हूँ और तीन बार या इससे अधिक सुब्हाना रब्बियल अज़ीम (मैं अपने बड़े रब तथा प्रतिपालक की पवित्रता बयान करता हूँ)पढ़ता हूँ। (चित्र संख्या ५ देखो)

५ रुकू का चित्र

(८) मैं अपने सिर को रुकू से उठाता हूँ।

क- अपने दोनों हाथों को अपने दोनों कंधों तक या कान तक उठाते हुये(चित्र संख्या १ - २ देखो)

ख- समिअल्लाहु लिमन हमिदह (अल्लाह ने उस आदमी की सुन ली जिसने उसकी प्रशंसा की) कहते हुये (अगर मैं इमाम हूँ अथवा अकेला)

ग- रुकू के बाद खड़ा होते समय मैं रब्बना व लकल हम्द (हमारे रब तेरे ही लिये प्रशंसा है) कहता हूँ

(९) मैं अल्लाहु अक्बर कहते हुये सजदह में जाता हूँ।

तथा सजदह सात अंगों पर होगा

(१) नाक के साथ माथा .

(२-३) दोनों हथेलियाँ .

(४-५) दोनों घुटने .

(६-७) दोनों पाँव की उंगलियों के भीतर का भाग क़िब्लह के ओर करके .

और सजदह में सुब्हान रब्बियल आला (मैं अपने उच्चतर रब की प्रशंसा करता हूँ) कहता हूँ, तथा इसे तीन बार या इससे अधिक दुहराता हूँ।(चित्र संख्या ६ - तथा ७ देखो)

६ एक ओर से सजदों का चित्र

७ पीछे से सजदह का चित्र संख्या ७ ताकि सजदह करते समय दोनों क़दम की उंगलियों के रखने का नियम स्पष्ट होजाये

(१०) अल्लाहु अक्बर कहते हुये मैं अपना सिर उठाता हूँ।
क- और अपना बायाँ पावँ बिछा कर उस पर बैठ जाता हूँ
ख- तथा अपना दायाँ पावँ खड़ा रखता हूँ .
ग- और अपने दोनो हथेलियाँ अपने दोनों जाँघों या अपने दोनों घुटनों पर रखता हूँ .
घ- और रब्बिग़फिरली (मेरे रब मुझे क्षमा करदे)कहता हूँ .
ज- तथा संतोष एवं स्थिरता रूप से मैं बैठता हूँ। (चित्र संख्या ८ - ९ देखो)

८ आगे के ओर से तथा जाँघ और घुटना पर हाथ रखकर बैठने की स्थिति के दिखाने का चित्र

९ पावँ के रखने की स्थिति को दिखाने के लिये पीछे की ओर से बैठने का चित्र

(११) मैं अल्लाहु अक्बर कहते हुये दूसरा सज्दह करता हूँ और उस में भी वैसा ही करता हूँ जैसा कि पहले सजदह में किया था।

(१२) फिर अल्लाहु अक्बर कहते हुये दूसरी रकअत के लिये खड़ा होता हूँ और उस में भी वैसा ही करता हूँ जैसा कि पहली रकअत में किया था।

(१३) दूसरे सजदह से उठने के बाद मैं बैठ जाता हूँ और तशह्हुद तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद पढ़ता हूँ।

(१४) अगर सलात दो रकअतों वाली है तो इसके बाद पहले अपने दाहिने फिर बायें ओर अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह (तुम पर अल्लाह की रक्षा तथा अधिकता हो) कहते हुये सलात से निकलने के लिये सलाम फेरता हूँ। (चित्रसंख्या १० - ११ देखो)

१० दाहिने ओर सलाम फेरने का चित्र

११ बायें ओर सलाम फेरने का चित्र

(१५) अगर सलात तीन या चार रकअत वाली हो तो तशह्हु पढ़ने के बाद तीसरी रकअत के लिये अल्लाहुअक्बर कहते हुये तथा दोनों हाथों को कान या कंधे तक उठाते हुये मैं खड़ा हो जाता हूँ और उन दोनों में मैं वैसा ही करता हूँ जैसा कि पहली रकअत मे क्या था हाँ खड़े होने की स्थिति में केवल सूरह फातिहा पढ़ता हूँ।

(१६) तीन और चार रकअत वाली सलात में अन्तिम तशहहुद(बैठक) में इस प्रकार मैं बैठता हूँ कि दाहिने पावँ की उंगलियों को क़िब्लह के ओर मोड़ कर दाहिने पावँ को खड़ा कर लेता हूँ और अपने बायें पावँ को अपनी दाहिनी पिंडली के नीचे कर लेता हूँ और बायें चठे को ज़मीन पर रख कर बैठता हूँ। (चित्र संख्या १२ देखो)

१२ अन्तिम तशहहुद में बैठक का चित्र

मंथन

- एक आदमी नें अस्र की सलात पढ़ी तथा पहली रकअत से खड़े होने के बाद रुकू छोड़ कर सजदह कर लिया क्या उसकी सलात सही हो गी ?
- एक आदमी ने मदीनह मुनव्वरह के ओर मुँह करके सलात पढ़ ली क्या उसकी सलात सही होगी ?
- एक आदमी ने सलात का समय होने से पहले पढ़ ली तो उस की सलात के बारे में आप क्या कहेंगे ?

दूसरा

तशह्हुद कंठस्थ करना

सलात में दूसरी रकअत के बाद जब मैं सिर उठाता हूँ तो बैठ कर तशह्हुद पढ़ता हूँ ,इसी प्रकार तीसरी तथा चौथी रकअत के बाद अन्तिम बैठक में भी तशहहुद पढ़ता हूँ तथा तशह्हुद यह है ।

तशह्हुद :

अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अलैका अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुह, अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन, अशहदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन अबदुहू व रसूलुह

अर्थ : (सारी प्रशंसा तथा सलातें और सब पवित्रतायें मात्र अल्लाह के लिए हैं, ऐ नबी आप पर सलाम ,अल्लाह की दया तथा उसकी अधिकता हो,क्षमा हो हम पर तथा अल्लाह के नेक दासियों भक्तों पर,मैं गवाही देता हूँ अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजने के योग्य नहीं है,तथा मैं गवाही देता हूँ कि निःसंदेह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके बन्दे तथा उसके संदेष्टा और रसूल है ।)

तीसरा

सूरह फ़ातिहा (कंठस्थ प्रत्यामन)

चौथा

क्रियात्मक वुज़ू तथा सलात का प्रत्यामन

सलात की दुआओं का पृष्ठ चिन्ह

दुआ का नाम	सलात में कहाँ पढ़ें गे	दुआ
तक्बीर	सलात आरंभ करते समय तथा एक आधार से दूसरे आधार के लिये स्थानांतरित होते समय	अल्लाहुअक्बर
दुआए सना या दुआए इस्तिफ़ताह	सलात आरंभ करते समय पहली बार अल्लाहुअक्बर कहने के बाद	सुब्हानका अललाहुम्मा व बिहम्दिका व तबारकस्मुका व तआला जद्दुका वलाइलाहा ग़ैरुक
तअव्वुज़	सूरह फ़ातिहा से पहले	अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैता निर्रजीम
बिस्मिल्लाह	सूरह फ़ातिहा से पहले	बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम
फ़ातिहा	खड़े होने की हालत में	इसका कथन पीछे बीत चुका है
आमीन कहना	फ़ातिहा के बाद	आमीन
रुकू की दुआ	रुकू	सुब्हाना रब्बियल अज़ीम
रुकू के बाद की दुआ	रुकू से उठने के बाद	समिअल्लाहु लिमन हमिदह
अल्लाह की प्रशंसा (तहमीद)	रुकू से उठने के बाद	रब्बना व लकल हम्द
सजदह की दुआ	सजदह में	सुब्हाना रब्बियल आला
इस्तिग़फ़ार	दोनों सजदह के बीच	रब्बना व लकल हम्दु
तशहहुद	दो रकअतों के बाद पहली बैठक तथा तीसरी या चौथी रकअत के बाद अन्तिम बैठक	इसका कथन पीछे बीत चुका है
नबी पर दरूद	अन्तिम तशह्हुद की बैठक	इसका कथन पीछे बीत चुका है
सलाम फेरना	सलात से निकलने के लिये	अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह

मैं अपनी जानकारी की परीक्षा लेता हूँ

मैं पढ़ता हूँ

१- सूरह फ़ातिहा (२) तशहहुद

एक रकअत में कितने रुकू तथा कितने सजदह होते हैं ?

....

सही वाक्य के ऊपर (✓)तथा गलत पर(✗)का चिन्ह लगाता हूँ।

- सलात पढ़ने वाला पहले सजदह करेगा फिर रुकू करेगा।
- सलात में केवल तक्बीर तह्रीमह(पहली बार अल्लाहु अकबर कहना) कहते समय अपने दोनों हाथ उठायेगा।
- सलात पढ़ने वाला पहली रकअत में रुकू के बाद दूसरी रकअत के लिये उठ जायेगा।
- सलात पढ़ने वाला अऊज़ुबिल्लाह तथा बिस्मिल्लाह के बाद सूरह फ़ातिहा पढ़ेगा।
- सलात पढ़ने वाला तशहहुद दोनों सज्दों के बीच पढ़ेगा।
- सलात समाप्त करने के लिये पहले दाहिने फिर बायें ओर सलाम फेरेगा।

सतंभ अ से सतंभ ब के वाक्यों के साथ उचित जोड़ लगाता हूँ.

अ	ब
तअव्वुज़	सुब्हाना रब्बियल आला
रुकू की दुआ	सुब्हाना रब्बियल अज़ीम
सजदह की दुआ	अस्सलामु अलैकुम व रह्मतुल्लाहि व बरकातुह
सलाम फेरना	अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम
	समिअल्लाहुलिमनहमिदह

पाँचवाँ पाठ

दरूद शरीफ कंठस्थ करना

पाठ के लक्ष्य

नये मुस्लिम से आशा एवं निवेदन है कि वह इस पाठ के नोदनों की पूर्ति करते समय :

१- दरूद शरीफ अच्छे प्रकार कंठस्थ करके पढ़े।
२- अच्छे प्रकार फ़ातिहा तथा तशह्हुद कंठस्थ करके पढ़े।
३- सूरह फ़ातिहा एवं तशह्हुद के साथ क्रियात्मक सलात पढ़े।

पाठ के लिये दिये गये परामर्श समय का बटवारा

विषय	समय
कंठस्थ करने के लिये दरूद शरीफ पढ़ना	२५मिनट
फ़ातिहा तथा तशह्हुद को दोहराना	२५ मिनट
क्रियात्मक सलात	२५मिनट
लक्ष्य तक पहुँचने का पता लगाना	१५मिनट

पाठन विधि के लिये साधन मंत्रण

१- दरूद शरीफ़ की आडियो कैसेट।
२- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद के शब्दों के अलग अलग परिचय पट्ट जिसे नया मुस्लिम तरतीब दे।

पहला

दरूद शरीफ कंठस्थ करना !

तशह्हुद पढ़ने के बाद मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर निम्न शब्दों में दरूद पढ़ता हूँ।

दरूद शरीफ़

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मद व अ़ला आलि मुहम्मद कमा सल्लैता अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नका हमीदुम् मजीद,अल्लाहुम्मा बारिक अ़ला मुहम्मद व अ़ला अलि मुहम्मद कमा बारकता अ़ला इब्राहीम व अ़ला अलि इब्रहीम इन्नका हमीदुम्मजीद.

अर्थः (ऐ मेरे अल्लाह दया भेज मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा उनके समस्त संतानों पर जैसा तूने इब्राहीम अलैहिस्सलाम तथा उनके संतानों पर दया भेजी निःसंदेह तू प्रशंसा के योग्य और उत्तम वाला है,ऐ मेरे अल्लाह तू अधिक्ता तथा बरकत भेज मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा उनके समस्त संतानों पर जैसा तूने इब्राहीम अलैहिस्सलाम तथा उनके संतानों पर अधिकता भेजा , निःसंदेह तू प्रशंसा के योग्य और उत्तम वाला है)

छठा पाठ

सूरह इख़्लास कंठस्थ करना

पाठ के लक्ष्य

नये मुस्लिम से आशा एवं निवेदन है कि वह इस पाठ के नोदनों की पूर्ति करते समय :

१- कंठस्थ करके सूरह इख़्लास पढ़े।
२- अच्छे प्रकार सूरह फातिह कंठस्थ करके पढ़े।
३- अच्छे प्रकार तशह्हुद कंठस्थ करके पढ़े।
४- अच्छे प्रकार दरूद कंठस्थ करके पढ़े।

पाठ के लिये दिये गये परामर्श समय का बटवारा

विषय	समय
कंठस्थ करने के लिये सूरह इख़्लास पढ़ना	२५मिनट
सूरह फ़तिहा दोहराना	१० मिनट
तशह्हुद दोहराना	१० मिनट
दरूद शरीफ दोहराना	१० मिनट
क्रियात्मक वुज़ू तथा सलात	२० मिनट
लक्ष्य तक पहुँचने का पता लगाना	१५मिनट

पाठन विधि के लिये साधन मंत्रण

१- सूरह इख़्लास की आडियो कैसेट ।
२- सूरह इख़्लास का इस्टीकर।

छठा पाठ — सूरह इख़्लास कंठस्थ करना

सातवाँ पाठ

सूरह कौसर तथा सूरह अस्र कंठस्थ करना

पाठ के लक्ष्य

नये मुस्लिम से आशा एवं निवेदन है कि वह इस पाठ के नोदनों की पूर्ति करते समय

१- कंठस्थ करके सूरह अस्र पढ़े।
२- कंठस्थ करके सूरह कौसर पढ़े।
३- अच्छे प्रकार कंठस्थ करके सूरह फ़ातिहा पढ़े।
४- अच्छे प्रकार कंठस्थ करके सूरह इख्लास पढ़े।
५- अच्छे प्रकार कंठस्थ करके तशह्हुद पढ़े।
६- अच्छे प्रकार कंठस्थ करके दरूद शरीफ़ पढ़े।

पाठ के लिये दिये गये परामर्श समय का बटवारा

विषय	समय
कंठस्थ करने के लिये सूरह अस्र पढ़ना	२० मिनट
कंठस्थ करने के लिये सूरह कौसर पढ़ना	२० मिनट
सूरह फ़ातिहा दोहराना	१० मिनट
सूरह इख्लास दोहराना	५ मिनट
तशह्हुद दोहराना	५ मिनट
दरूद शरीफ़ दोहराना	५ मिनट
क्रियात्मक वुज़ू तथा सलात	१५ मिनट
लक्ष्य तक पहुंचने का पता लगाना	१० मिनट

पाठन विधि के लिये साधन मंत्रण

१- सूरह अस्र तथा कौसर की आडियो कैसेट।
२- सूरह अस्र का इस्टीकर।
३- सूरह कौसर का इस्टीकर।

पहला

सूरह अस्र (कंठस्थ करना)

سورة العصر

بسم الله الرحمن الرحيم

﴿ وَالْعَصْرِ(١)إِنَّ الإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ(٢) إِلاَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ(٣) ﴾

सूरह अस्र

अर्थ : काल की कसम एवं सौगन्ध। वास्तव में समस्त मनुष्य सर्वथा घाटे में हैं। उनके अतिरिक्त जो ईमान लाये तथा पुण्यकारी कार्य किये तथा जिन्होंने आपस में सत्य की वसीयत की तथा एक दूसरे को धैर्य रखने का उपदेश दिया।

सूरह कौसर (कंठस्थ करना)

سورة الكوثر

بسم الله الرحمن الرحيم

﴿ إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ(١)فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ(٢)إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ٣ ﴾

सूरह कौसर

अर्थ : निःसंदेह हमने तुझे कौसर (तथा बहुत कुछ)दिया है। तो तू अपने अल्लाह के लिए सलात पढ़ कुर्बानी कर।

दूसरा
सूरह फातिहा तथा इख़्लास, (कंठस्थ दोहराना)
तीसरा
तशहहुद तथा दरूद शरीफ़(कंठस्थ दोहराना)
चौथा
वुज़ू सलात की क्रियात्मक

सारे पाठों के समझने के विषय में अपने ज्ञान को परखिये

अर्जन परीक्षा (१००)

अर्जन परीक्षा के नियम :

१- क्षात्र को पाठ्यकम आरंभ करते समय यह सूचना दे दी जाये कि अन्त में अर्जन परीक्षा होगा।
२- पाठ्यकम में सफलता प्राप्त करने के लिये पुरे संख्या में से कम से कम ८० संख्या प्राप्त करना आवश्यक है।
३- सफलता तक न पहुँचने में क्षात्र को उसकी कमियों में पुनः तयारी करने का परामर्श दिया जाये।

१- ईमान के आधार कौन कौन हैं ? (१२)

....

....

....

....

२- इस्लाम के आधार कौन कौन है ? (१०)

....

....

....

....

३- निम्न लिखित स्थिति में आप क्या करें गे ? (१५)

क. सलात पढ़ते समय हवा निकलने से आप का वुज़ू भंग हो गया ?

....

ख. नींद से उठने के बाद आपने अपने कपड़े पर वीर्य का छाप देखा ?

....

ग. आप अपवित्र हैं तथा सलात पढ़ना चाहते हैं ?

....

घ.आप वुज़ू करते समय अपना पावँ धोना भूल गये ?

....

न. वुज़ू करने के बाद आप सो गये फिर जग गये और अब सलात पढ़ना चाहते हैं ?

....

४- निम्न लिखित हर सलात की रकअतें लिखो ? (१०)

१- फज्र ( )
२- ज़ुहर ( )
३- अस्र ( )
४- मग़्रिब ( )
५- इशा ( )

५- व्यावहारिक भाग

१- वुज़ू व्यावहारिक करना	(१५)
२- सलात व्यावहारिक करना	(२५)
३- सूरह फ़ातिहा सुनाना	(७)
४- सूरह कौसर तथा इख्लास सुनाना	(६)